I.G.N.O.U. Based

NEERAJ®

E.C.O.-13

व्यावसायिक पर्यावरण

(Business Environment)

By: Dr. Narad Rai

Question Bank Cum Chapterwise Reference Book
Including **Many Solved Question Papers**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 240/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajignoubooks.com**
Website: **www.neerajignoubooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only	*Typesetting by:* Competent Computers	*Printed at:* Novelty Printer

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajignoubooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajignoubooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006

Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

CONTENTS

व्यावसायिक पर्यावरण
(Business Environment)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1

S.No. ***Chapterwise Reference Book*** *Page*

व्यावसायिक पर्यावरण का परिचय (INTRODUCTION TO BUSINESS ENVIRONMENT)

1. व्यावसायिक पर्यावरण के स्वरूप और आयाम — 1
   (Nature and Dimensions of Business Environment)
2. आर्थिक पर्यावरण–विहंगावलोकन — 12
   (Economic Environment: An Overview)
3. सामाजिक और सांस्कृतिक पर्यावरण — 25
   (Social and Cultural Environment)

व्यवसाय और सरकार (BUSINESS AND GOVERNMENT)

4. भारतीय अर्थव्यवस्था का ढाँचा — 40
   (Structure of Indian Economy)
5. व्यवसाय में सरकार की भूमिका — 53
   (Role of Government in Business)

S.No.	Chapter	Page
6.	समष्टि आर्थिक नीतियाँ (Marco-Economic Policies)	65
7.	उपभोक्ता संरक्षण (Consumer Protection)	80
	आर्थिक नीति और ढांचा (ECONOMIC POLICY AND FRAMEWORK)	
8.	उद्योग नीति (Industrial Policy)	93
9.	औद्योगिक रुग्णता (Industrial Sickness)	103
10.	औद्योगिक संबंध (Industrial Relations)	118
11.	छोटे पैमाने का क्षेत्र (Small-Scale Sector)	130
	बाह्य क्षेत्र एवं आर्थिक सुधार (EXTERNAL SECTOR AND ECONOMIC REFORMS)	
12.	विदेशी निवेश और बहुराष्ट्रीय निगम (Foreign Investment and MNCs)	142
13.	भारत का विदेशी व्यापार (India's Foreign Trade)	157
14.	भुगतान-शेष एवं निर्यात-आयात नीति (Balance of Payment and EXIM Policy)	172
15.	अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सम्बन्ध (International Trade Relations)	183
16.	नई आर्थिक नीति (New Economic Policy)	192

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER
(June – 2019)

(Solved)

व्यावसायिक पर्यावरण

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

(कुल का : 70%)

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. भारत में योजना के दीर्घकालीन लक्ष्य क्या हैं? भारत में योजना की प्रमुख उपलब्धियों एवं विफलताओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-20, प्रश्न 2, पृष्ठ-16, '1951-1990 के दौरान योजना की उपलब्धियां और उनकी विफलताएं'

प्रश्न 2. व्यावसायिक पर्यावरण की परिभाषा दीजिए। व्यावसायिक पर्यावरण के तीन घटक (components) क्या हैं? व्यवसाय पर उनके प्रभावों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-6, प्रश्न 1, पृष्ठ-8, प्रश्न 2

प्रश्न 3. व्यवसाय में सरकार की नियामक एवं उद्यमकर्ता संबंधी भूमिका की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-53, 'नियामक भूमिका', पृष्ठ-55, 'उद्यमकर्ता संबंधी भूमिका'

प्रश्न 4. 'मौद्रिक नीति' की परिभाषा दीजिए। भारत में प्रयुक्त मौद्रिक नीति के उपकरण क्या हैं? उनकी संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-70, 'मौद्रिक नीति का अर्थ', 'भारत में मौद्रिक नीति के उपकरण'

प्रश्न 5. औद्योगिक रुग्णता (Industrial Sickness) के क्या कारण हैं? इस समस्या के समाधान के लिए सरकार द्वारा अपनाए गए विभिन्न उपायों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-105, 'रुग्णता के कारण', पृष्ठ-115, प्रश्न 8

प्रश्न 6. भारत में औद्योगिक विवादों के कारणों का उल्लेख कीजिए। औद्योगिक विवादों की रोकथाम एवं उनके निपटान के लिए भारत सरकार द्वारा उठाए गए विभिन्न कदमों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-125, प्रश्न 2 और 3

प्रश्न 7.विदेशी पूँजी से क्या तात्पर्य है? इसकी भूमिका एवं कमियों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-150, प्रश्न 1, पृष्ठ-145, 'विदेशी पूंजी की भूमिका'

प्रश्न 8. भुगतान शेष के घाटों के क्या कारण हैं? इस समस्या के समाधान के लिए भारत सरकार द्वारा अपनाए गए उपायों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-180, प्रश्न 3

■■

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER
(June – 2018)

(Solved)

व्यावसायिक पर्यावरण

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

(कुल का : 70%)

नोट : खण्ड-क तथा खण्ड-ख दोनों कीजिए।

खण्ड-क

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

***(a)* विभिन्न स्तरों पर पर्यावरण से व्यवसाय किस प्रकार प्रभावित होता है?**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4-5, 'विभिन्न स्तरों पर व्यावसायिक पर्यावरण'

***(b)* सामाजिक व्यवस्था व्यवसाय के साथ किस प्रकार अन्योन्य क्रियान्वयन करती है? संक्षेप में व्याख्या कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-25-26, 'सामाजिक व्यवस्था और व्यवसाय में अन्योन्य क्रिया'

***(c)* सकल राजकोषीय घाटे के वित्तीयन के मुख्य स्रोतों का वर्णन कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-68-69, 'सकल राजकोषीय घाटे के वित्तीयन के साधन'

***(d)* सार्वजनिक क्षेत्रीय उद्यमों की पुनः संरचना के लिए सरकार द्वारा किए गए विभिन्न उपायों का विवेचन कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-116-117, प्रश्न 9 *(iv)*

***(e)* छोटे पैमाने के उद्योगों के संवर्धन के विभिन्न कार्यक्रमों का वर्णन कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-134-135, 'छोटे पैमाने के उद्योगों के संवर्धन के कार्यक्रम

***(f)* बहुराष्ट्रीय निगमों (MNCs) की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-150, 'बहुराष्ट्रीय निगमों की (MNCs) की विशेषताएं'

खण्ड-ख

प्रश्न 2. व्यावसायिक पर्यावरण के विभिन्न आर्थिकेतर (non-economic) कारकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3-4, 'व्यवसाय का आर्थिक पर्यावरण'

प्रश्न 3. ''व्यवसाय आज सामाजिक व्यवस्था का अभिन्न अंग बन गया है।'' इस कथन का उचित उदाहरणों के साथ विस्तारण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-29-31, 'व्यवसाय का सामाजिक दायित्व'

प्रश्न 4. व्यवसाय में सरकार की चौगुनी भूमिका को नामांकित कीजिए। नियामक नियंत्रण के द्वारा सरकार किस प्रकार व्यावसायिक कार्यों की देखभाल करती है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-53-54, 'सरकार की चौगुनी भूमिका तथा नियामक भूमिका'

प्रश्न 5. भारत के आर्थिक विकास तथा आर्थिक कार्यविधियों के विनियमन में भारतीय रिजर्व बैंक की तीन प्रकार की भूमिकाओं का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-72, 'भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका'

प्रश्न 6. औद्योगिक विवादों के मुख्य कारण क्या हैं? उनके निपटान के कानूनी एवं गैर-कानूनी उपायों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-125-126, प्रश्न 2 और 3

प्रश्न 7. संयुक्त उद्यम (joint venture) से क्या तात्पर्य है? इसके लाभ तथा हानियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-147-149, 'संयुक्त उद्यम'

प्रश्न 8. विश्व व्यापार संगठन (WTO) क्या है? इसके विभिन्न कार्यों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-185, 'विश्व व्यापार संगठन' तथा पृष्ठ-186, 'WTO के कार्य'

■■

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

व्यावसायिक पर्यावरण
(Business Environment)

व्यावसायिक पर्यावरण का परिचय
(Introduction To Business Environment)

व्यावसायिक पर्यावरण के स्वरूप और आयाम
(Nature and Dimensions of Business Environment)

1

परिचय

व्यावसायिक पर्यावरण का अध्ययन उद्यम के विकास के लिए अति आवश्यक होता है। व्यावसायिक शब्द व्यवसाय का विशेषण है। व्यवसाय वह क्रिया है, जो लाभ अर्जित करने की दृष्टि से की जाती है। व्यावसायिक पर्यावरण उस समष्टिगत आर्थिक सन्दर्भ की व्यवस्था करता है, जिसके अन्तर्गत कोई व्यवसायी अपना कारोबार करता है। व्यवसाय आर्थिक क्रियाकलाप होता है, जिसमें उपभोग, वितरण, उत्पादन और विनिमय आदि कार्य हो सकते हैं। यही इसकी विस्तृत अवधारणा है। व्यष्टि दृष्टिकोण (Macro view point) से व्यावसाायिक फर्म एक आर्थिक इकाई होती है। इसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरणीय संसाधनों आगतों (Inputs) के समूह को निर्गतों (Outputs) में परिवर्तित करना होता है। इसमें वस्तुएं एवं सेवायें दोनों शामिल होती हैं। व्यावसायिक फर्मों का उद्देश्य भी लाभ अर्जित करना होता है, इसलिए अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए संसाधनों के चुनाव के संबंध में गंभीरता से विचार करना होता है। पर्यावरण उन विभिन्न अनियंत्रित कारकों से बनता है, जिसके अन्तर्गत किसी व्यवसाय का कार्य होता है। पर्यावरण आर्थिक हो सकता है या आर्थिकेतर भी हो सकता है। आर्थिक पर्यावरण के अंतर्गत सरकार की मुद्रा संबंधी राजकोषीय और आर्थिक नीतियां आती हैं। आर्थिकेतर पर्यावरण के अन्तर्गत कानूनी, राजनीतिक, सामाजिक, भौतिक और सांस्कृतिक कारक आते हैं। पर्यावरण का प्रत्येक तत्त्व एक दूसरे से संबंधित होता है और एक दूसरे को प्रभावित करता है। पर्यावरण का प्रत्येक घटक राष्ट्रीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय हो सकता है। व्यावसायिक नीतियां और युक्तियां परिवर्तनशील और गत्यात्मक होती हैं। इन्हें पर्यावरण के अनुरूप ढालना होता है। व्यवसाय की सफलता पर्यावरणीय परिवर्तन का अनुमान लगाने और उसके अनुसार अपनी व्यावसायिक नीतियों और युक्तियों में संशोधन करने की क्षमता पर निर्भर करती है।

अध्याय का विहंगावलोकन

व्यावसायिक पर्यावरण का अर्थ और महत्त्व
(Meaning and Significance of Business Environment)

व्यावसायिक पर्यावरण उस समष्टिगत आर्थिक संदर्भ की व्यवस्था करता है, जिसके अंतर्गत कोई व्यावसायिक फर्म अपना कार्य-व्यापार करती है। पर्यावरण शब्द से तात्पर्य बाह्य कारकों और शक्ति के समूह से होता है। ये कारक फर्म के नियंत्रण में नहीं होते। प्रत्येक फर्म बाह्य पर्यावरण से प्रभावित होती है। वह स्वयं इन पर अपना प्रभाव नहीं छोड़ सकती। ऐसे में फर्म अपने आंतरिक क्रियाकलापों में इस प्रकार का परिवर्तन करती है, जिससे वह अपने बाह्य पर्यावरण से समायोजन कर सके। इसके लिए उसमें लचीलापन होना आवश्यक है। लचीलापन होने पर ग्रहणशीलता (adoptability) और अनुकूलनशीलता (adaptability) बढ़ जाती है, जिसके फलस्वरूप फर्म बाह्य पर्यावरण का सामना करने में समर्थ हो जाती है।

कारकों के आधार पर व्यावसायिक पर्यावरण दो प्रकार का हो सकता है–आर्थिक पर्यावरण और आर्थिकेतर पर्यावरण। आर्थिक कारकों या चरों का स्वरूप आर्थिक होता है और उसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध आय, वित्तीय नीति, राजकोषीय उपायों आदि आर्थिक विषयों के साथ होता है। आर्थिकेतर पर्यावरण का स्वरूप आर्थिक नहीं होता, परन्तु वह व्यवसाय की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

है। उदाहरण के लिए–संस्कृति, परम्परा, इतिहास, राजनीति, समाजशास्त्रीय कारक आदि। आर्थिक और आर्थिकेतर कारकों का प्रभाव प्राय: मिला-जुला होता है, इसलिए इन्हें एक साथ जोड़कर सम्बोधित किया जाता है। अर्थव्यवस्था पर सामाजिक परिस्थितियों के प्रभाव तथा समाज पर आर्थिक कारकों के प्रभाव को मिलाकर सामाजिक-आर्थिक प्रभाव या इन कारकों को सामाजिक-आर्थिक कारक कहा जाता है। इस प्रकार राजनैतिक पर्यावरण से प्रभावित अर्थव्यवस्था पर राजनैतिक-आर्थिक कारकों का प्रभाव होता है। कई बार देखा गया है कि आर्थिक परिवर्तन से राजनैतिक क्रान्ति आ जाती है। व्यावसायिक पर्यावरण का उद्देश्य आर्थिक लाभ कमाना होता है, परन्तु उसे राज्य और समाज का ध्यान रखना भी आवश्यक होता है। व्यवसायी वर्ग मुनाफाखोर (Profiteer) नहीं होना चाहिए। उसे सामाजिक और राजनीतिक कारकों आदि का भी ध्यान रखना चाहिए, तभी संतुष्टि का इष्टतमीकरण (Optimisation of Satisfaction) होता है अर्थात व्यवसाय और समाज के बीच संतुलन स्थापित होता है। यहाँ व्यवसायी लाभ कमाकर संतुष्ट होता है तथा व्यवसाय के विभिन्न कार्यकलापों द्वारा सामाजिक मापदण्ड की पूर्ति से समाज संतुष्ट होता है। इस प्रकार व्यवसायी को योजना बनाते समय सामाजिक पर्यावरण का ध्यान रखना चाहिए।

व्यावसायिक पर्यावरण अधिक गतिशील और परिवर्तनशील होता है तथा उसके अनेक आयाम होते हैं। इसका विभाजन विभिन्न कसौटियों–समय, स्थान, शक्तियों अन्य और कारकों–के आधार पर किया जा सकता है।

(i) **समय**–भूतकालिक पर्यावरण, वर्तमान पर्यावरण और भावी पर्यावरण।

(ii) **स्थान**–स्थानीय पर्यावरण, क्षेत्रीय पर्यावरण, राष्ट्रीय पर्यावरण, अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण।

(iii) **शक्तियां**–बाजार शक्तियां, राजनीतिक घटनाएं, सामाजिक परिवर्तन।

इन शक्तियों के कारण वर्तमान या भविष्य के पर्यावरण की पहचान करना, उसका वर्णन करना तथा उनकी व्याख्या करना कठिन होता है। निकट भविष्य में होने वाले परिवर्तनों के सम्बन्ध में व्यवसाय को और विशेष रूप से प्रबन्धकों को पहले से अनुमान लगाना आवश्यक होता है, ताकि परिवर्तनों व उनके प्रभावों का सामना किया जा सके। पूर्वानुमान में अनिश्चितता का खतरा बना रहता है, इसलिए प्रमुख कारकों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। आगे चलकर कारकों के आधार पर आर्थिक और आर्थिकेतर पर्यावरण का निर्धारण किया जा सकता है। ये दोनों पर्यावरण परस्पर घनिष्ठ रूप से जुड़े होते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं, इसलिए इनकी पहचान करना एक दुष्कर कार्य है। फिर भी इनकी पहचान व्यवसाय के लिए लाभदायक होती है।

व्यावसायिक पर्यावरण के घटक
(Components of Business Environment)

प्राय: व्यावसायिक पर्यावरण के दो भाग होते हैं–आंतरिक पर्यावरण और बाह्य पर्यावरण। आंतरिक पर्यावरण के अंतर्गत वे कारक आते हैं, जिन पर फर्म का नियंत्रण होता है; जैसे–फर्म के संसाधन, नीतियां एवं उद्देश्य आदि।

बाह्य पर्यावरण के कारक फर्म के नियंत्रण में नहीं होते, वे स्वतंत्र होते हैं। बाह्य पर्यावरण के घटकों को निम्नलिखित प्रकार से प्रदर्शित किया जा सकता है–

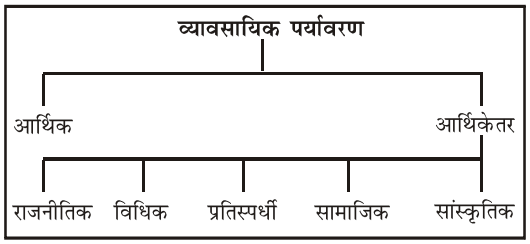

व्यवसाय का आर्थिक पर्यावरण
(Economic Environment of Business)

आर्थिक पर्यावरण के तीन भाग होते हैं–आर्थिक परिस्थितियां, आर्थिक नीति और आर्थिक प्रणाली। आर्थिक परिस्थितियों के अंतर्गत अर्थव्यवस्था का स्वरूप, आर्थिक संसाधन, आय का स्तर, आय व धन का वितरण और अर्थव्यवस्था के विकास की अवस्थाएं आती हैं। ये कारक व्यावसायिक फर्म द्वारा अपनाए जाने वाले कार्यक्रमों को प्रभावित करते हैं। अर्थव्यवस्था का स्वरूप तीन प्रकार का होता है–

(i) निर्बाध बाजार अर्थव्यवस्था (Free Market Economy) या पूँजीवादी अर्थव्यवस्था।

(ii) केन्द्रीय आयोजित अर्थव्यवस्था (Central Planned Economy) या समाजवादी अर्थव्यवस्था।

(iii) मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed Economy)।

निर्बाध बाजार व्यवस्था निजी क्षेत्र के हाथों में होती है। केन्द्रीय आयोजित अर्थव्यवस्था में अर्थव्यवस्था राज्य के हाथों में होती है। मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र तथा सार्वजनिक क्षेत्र दोनों साथ-साथ कार्य करते हैं। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में निजी उद्यमों को बहुत अधिक स्वंतत्रता होती है। इस अर्थव्यवस्था की निम्नलिखित विशेषतायें होती हैं–

(i) इस अर्थव्यवस्था में उत्पादन के कारकों; यथा–भूमि, श्रम, पूँजी और उत्पादन के स्तर पर निजी व्यावसायियों का अधिकार होता है।

(ii) इसका उद्देश्य लाभ कमाना होता है और आय का साधन खुले बाजार में वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन और विक्रय से होता है। इसमें सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता।

(iii) पेशे के संबंध में चुनाव, उपयोग, बजट, निवेश में पूरी स्वतंत्रता होती है।

(iv) विनिमय में सरकार कोई हस्तक्षेप नहीं करती, परन्तु शेष विश्व में इस प्रकार की व्यवस्था नहीं मिलती।

साम्यवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन और वितरण के सभी कारकों पर राज्य का अधिकार होता है। उपयोग के स्वरूप का

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

निर्धारण और कार्यान्वयन भी सरकार करती है। निजी उद्यम का इसमें कोई स्थान नहीं होता। सोवियत संघ, चीन, हंगरी और पोलैंड में इसी प्रकार की अर्थव्यवस्था है।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था और साम्यवादी अर्थव्यवस्था दोनों मिलकर मिश्रित अर्थव्यवस्था बनाते हैं, परन्तु विभिन्न देशों में इनका मिश्रण अलग-अलग प्रकार का होता है, तथापि यहां विनियमन सरकार करती है। निजी उद्यमों को सरकारी नियंत्रण विनियमन के अन्तर्गत आजादी होती है। भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था प्रचलित है।

आर्थिक पर्यावरण अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कारक है; जिस पर किसी व्यावसायिक फर्म की कार्यप्रणाली निर्भर करती है। वस्तुत: किसी देश की आर्थिक प्रणाली का निर्धारण उस देश की जनता और सरकार करती है। व्यावसायिक फर्मों को अपने कारोबार की योजना बनाते समय आर्थिक रूपरेखा के स्वरूप, ढांचे तथा उसमें होने वाले परिवर्तन का ध्यान रखना पड़ता है। यह राष्ट्रीय योजना के लक्ष्य और सरकार की आर्थिक नीतियों पर आधारित होती है।

व्यवसाय का आर्थिकेतर पर्यावरण
(Non-Economic Environment of Business)

आर्थिकेतर पर्यावरण के मुख्य घटक सभी देशों की संस्कृति, समाजशास्त्र, इतिहास, राजनिति, विधिक ढांचा आदि होते हैं। ये घटक पर्याप्त महत्त्वपूर्ण होते हैं और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं। वस्तुत: आर्थिकेतर कारक और आर्थिक कारक एक दूसरे से जुड़े होते हैं। कभी-कभी इन दोनों को मिलाकर सामाजिक-आर्थिक या राजनीतिक कारक नाम से जाना जाता है। आर्थिकेतर कारक निम्नलिखित हैं–

1. सामाजिक कारक (Sociological Factors)–व्यवसाय के आर्थिकेतर पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण भाग सामाजिक कारक हैं। इसमें अधिकारियों, प्रबन्धकों, दायित्व, प्रत्यायोजन, श्रमिकों की सहभागिता, संपत्ति, आय और व्यय आदि के प्रति समाज का विचार सम्मिलित है। इसमें समाज के रीति-रिवाजों की उदारता एवं अनुदारता भी शामिल है। इसके साथ वैज्ञानिक कार्यविधि, धर्म के विचार, वर्ग-संरचना, जाति व्यवस्था आदि महत्त्वपूर्ण पक्ष होते हैं। इसी प्रकार से शिक्षा, ज्ञान की प्राप्ति, पेशेवर और तकनीकी प्रशिक्षण भी व्यावसायिक कार्यकलापों को प्रभावित करते हैं।

सामाजिक कारक सामाजिक-संस्कृतिक या सामाजिक-शैक्षिक हो सकते हैं। लोगों की खरीद, गैर-उपयोग संबंधी आदतें, विश्वास और मूल्य भी महत्त्वपूर्ण सामाजिक कारक हैं। प्रभावशाली और सफल व्यवसाय की युक्ति सामाजिक–शैक्षिक और सांस्कृतिक चरों के अनुकूल होती है। ऐसी ही विशेषता विपणन में भी होनी चाहिए। कुछ उत्पादों की वृद्धि में सामाजिक जड़ता (Social inertia) बाधा डालती है। उदाहरण के लिए, परिवार नियोजन के उपकरणों के बेचने या भोजन बनाने में गोबर गैस के प्रयोग को लोग अच्छा नहीं मानते। ऐसे में व्यावसायिक कर्मचारियों को दोहरी नीति अपनानी होगी। एक ओर सामाजिक लांछन (Stigma) के अनुरूप कार्य करना होगा और ऐसी व्यवस्था अपनानी होगी, जिससे मूल्य व्यवस्था (Value System) को भी परिवर्तित किया जा सके।

लोगों का अधिकारों के लिए आन्दोलन उपभोक्तावाद कहलाता है। यह भी सामाजिक-आर्थिक पर्यावरण को बहुत अधिक प्रभावित करता है। इसका उदेश्य विक्रेताओं के प्रति उपभोक्ताओं के अधिकारों और शक्तियों की वृद्धि करना है। उपभोक्ताओं के कल्याण का ध्यान रखना भी व्यवसाय के लिए आवश्यक होता है। व्यवसायियों का उत्तरदायित्व उस समय और भी अधिक बढ़ जाता है, जब समाज अधिक शिक्षित हो जाता है।

2. राजनीतिक और विधिक पर्यावरण (Poltical and Legal Environment)–राजनीतिक और विधिक पर्यावरण एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। राजनीतिक परिस्थितियों के कारण अधिनियमों या विधि का निर्माण होता है। राजनीतिक परिस्थितियां निम्नलिखित हो सकती हैं–

(i) देश का शासन चलाने वाले राजनीतिक संगठन की विचारधाराएं
(ii) नौकरशाही की भूमिका और उसका विचार
(iii) राजनीतिक दशाएं–स्थिर या अस्थिर
(iv) विधिक नियम और अधिनियम
(v) संविधान संशोधन में नम्यता
(vi) विदेशी नीति तथा विदेशी संबंध
(vii) देश की छवि
(viii) विधि तंत्र का मत, आदि।

भारत में व्यवसाय पर इनसे संबंधित कानूनों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। व्यवसाय के विभिन्न पक्षों–अवस्थिति, लाइसेंस प्रणाली, कीमत निर्धारण, प्रसार, वितरण तथा श्रम से संबंधित नियम होते हैं। व्यावसायिक संगठनों के कार्यपालक तथा प्रबंध कर्मचारियों को इन विधिक विनियमों पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

3. प्रतिस्पर्धी वातावरण (Competitive Environment)–प्रतिस्पर्धी कारक बाह्य पर्यावरण का एक महत्त्वपूर्ण चर है और यह व्यवसाय को बहुत प्रभावित करता है। प्रतिस्पर्धा तीन प्रकार की होती है–*(i)* पूर्ण प्रतिस्पर्धा, *(ii)* एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा, *(iii)* अल्पाधिकारी प्रतिस्पर्धा।

पूर्ण प्रतिस्पर्धा में कई फर्में होती हैं। अत: बाजार की शक्ति इन सभी में बंटी हुई होती है। एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा में एक फर्म शक्तिशाली होती है, इसलिए यहां कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होती। अल्पाधिकार प्रतिस्पर्धा में बाजार शक्ति सीमित फर्मों में होती है। इसमें यह अपेक्षा की जाती है कि ये फर्में कीमत, उत्पादन आदि के लिए संयुक्त निर्णय ले सकती हैं। किसी फर्म की शक्ति का अनुमान बाजार में विद्यमान प्रतिस्पर्धा के प्रकार से लगाया जा सकता है। प्रतिस्पर्धा को नियमित करने के लिए भी कानून बनाये गये हैं। भारत में एकाधिकारी तथा अवरोधक व्यापारिक अधिनियम (MRTP Act) है, जिसका उद्देश्य बाजार में एकाधिकार को रोकना और बाजार शक्ति को सभी में वितरित करना है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

4. जनांकिकीय पर्यावरण (Demographic Environment)–जनांकिकीय पर्यावरण से तात्पर्य जनसंख्या का आकार और उसकी वृद्धि से है। इसमें स्त्री-पुरुष में भेद, संरचना, परिवार का आकार, धर्म आदि शामिल हैं। जनसंख्या भी व्यवसाय को प्रभावित करती है। जनसंख्या के बढ़ने से श्रम आपूर्ति में वृद्धि होती है। फलस्वरूप मांग बढ़ती है और उत्पादन की श्रमप्रधान तकनीकों को बढ़ावा मिलता है। श्रमिकों की कमी की दशा में श्रम बचत करने वाली तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। भारत जैसे विकासशील देश में अधिक जनसंख्या के कारण श्रम सस्ता है तथा बाजार में मांग बढ़ने से बहुराष्ट्रीय कम्पनियां यहां तेजी से निवेश कर रही हैं।

5. भौतिक तथा प्रौद्योगिकीय पर्यावरण (Physical and Technological Environment)–आर्थिकेतर चरों में भौतिक (भौगोलिक) तथा प्रौद्योगिकीय पर्यावरण एक महत्त्वपूर्ण कारक है, जो अर्थव्यवस्था को बहुत अधिक प्रभावित करता है। भौतिक कारकों के कारण उत्पाद मिश्रण में परिवर्तन पर्यावरण के अनुकूल बनाने के लिए किया जाता है। भौतिक सुविधाओं; जैसे बिजली की सुविधा की उपलब्धता व्यवसाय में वृद्धि को बढ़ावा देती है। उदाहरण के लिए जहां बिजली उपलब्ध है, वहां बिजली के उपकरणों की मांग अधिक होती है और मांग की पूर्ति के लिए व्यवसाय को बढ़ाना पड़ता है।

प्रौद्योगिकीय पर्यावरण का संबंध विज्ञान से होता है। वैज्ञानिक आविष्कारों के साथ इसका तेजी से विस्तार हो रहा है, परन्तु इसके लिए सामाजिक लागत भी देनी पड़ती है। प्रौद्योगिकीय पर्यावरण से उत्पादों का प्रारूप भी प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए, अमेरिका तथा अन्य देशों में प्रौद्योगिकीय पर्यावरण है, इसलिए वहां के बिजली के सामान और उपकरण 110 वोल्ट के बनाए जाते हैं। भारत में इसकी कमी के कारण बेचने के लिए 220 वोल्ट के उपकरण बनाए जाते हैं। प्रौद्योगिकीय विकास आर्थिक विकास तो करता है, परन्तु इसके लिए प्रदूषण जैसी सामाजिक लागत भी चुकानी पड़ती है, इसलिए जीवविज्ञानी, परिस्थितिविज्ञानी एवं समाजशास्त्री सामाजिक लागत के खतरे से चिंतित हैं। अब यह विचारधारा बनती जा रही है कि सामाजिक लागत-लाभ विश्लेषण के लिए जागरूकता का विकास किया जाए।

आर्थिक और आर्थिकेतर पर्यावरण के बीच पारस्परिक प्रभाव (Intraction between Economic and Non-Economic Environment)

आर्थिक और आर्थिकेतर पर्यावरण एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और वे अलग नहीं हो सकते। उन्हें एक दूसरे से अलग पहचाना भी नहीं जा सकता। वस्तुतः उन्हें अलग-अलग करके विचार करना संभव नहीं है। ऐसा करने का कोई विशेष प्रयोजन भी नहीं होता। आर्थिक पर्यावरण बहिर्जात (Exogenous) तथा अंतर्जात (Endogenous) दोनों ही होता है। यह आर्थिकेतर पर्यावरण बनाता है और स्वयं आर्थिकेतर पर्यावरण से बनता भी है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक कारक आर्थिकेतर कारक से प्रभावित होता है।

व्यवसाय की नीतियां और युक्तियां गत्यात्मक हो जाती हैं, क्योंकि व्यावसायिक पर्यावरण गत्यामक और स्वंतत्र होता है। किसी व्यवसाय की सफलता निम्नलिखित दो बातों पर निर्भर करती है–

(i) कोई व्यवसाय आर्थिक तथा आर्थिकेतर पर्यावरण में होने वाले बदलावों के स्वरूप, मात्रा और दिशा के विषय में कितना सही अनुमान लगा लेता है।

(ii) कोई व्यवसाय होने वाले परिवर्तनों में अपनी युक्तियों में कितना सही परिवर्तन और अनुकूलन कर पाता है।

विभिन्न स्तरों पर व्यवासायिक पर्यावरण (Business Environment at Various Levels)

व्यावसायिक पर्यावरण बाह्य कारकों और शक्तियों का समूह होता है और फर्म का उन पर कोई नियंत्रण नहीं होता। व्यावसायिक पर्यावरण के विभिन्न घटकों–राजनीतिक, कानूनी, प्रतिस्पर्धी, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पर्यावरण में परिवर्तन होता रहता है तथा यह विभिन्न स्थानों तथा विभिन्न समय पर पृथक-पृथक होता है। स्पष्ट है कि पर्यावरण वर्तमान, भूत और भविष्य सभी में अलग-अलग प्रकार का होता है। इस प्रकार फर्म की परिस्थितियों में बदलाव आता रहेगा। फर्म की वर्तमान स्थिति भविष्य में अलग प्रकार की हो सकती है।

समय के समान विभिन्न स्थानों का व्यावसयिक पर्यावरण भी महत्त्वपूर्ण होता है। विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्रकार का व्यावसायिक पर्यावरण होता है। इसलिए कोई भी एक स्थान पर अपनी सम्पूर्ण शक्ति नहीं लगा सकता। जो स्थिति वाराणसी या गोरखपुर में होगी, वही स्थिति दिल्ली और गाजियाबाद में नहीं होगी। इसलिए किसी फर्म का विभिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न प्रकार से विश्लेषण करना होगा। एक स्थान की फर्म का दूसरे स्थान पर चाहे देश हो या विदेश हो, नये प्रकार से विचार करना होगा। फर्मों के स्थानों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है–

(i) क्षेत्रीय; *(ii)* राष्ट्रीय; *(iii)* अंतर्राष्ट्रीय।

क्षेत्रीय स्तर

व्यावसायिक फर्म को उस क्षेत्र की स्थितियों का विश्लेषण करना चाहिए, जिससे वहां का पर्यावरण पता चल सके। पर्यावरण विश्लेषण के साथ पर्यावरण के विभिन्न घटकों–आर्थिक और आर्थिकेतर–पर भी विचार करना चाहिए। यह कार्य क्षेत्र विशेष के संदर्भ में होगा। उदाहरण के लिए, यदि कोई फर्म दक्षिण भारत में स्थापित करनी है, तो वहां के लोगों की सामाजिक और सांस्कृतिक आदतों, इतिहास, व्यय करने की क्षमता, रीति-रिवाज, राजनीतिक स्थिति और आय के स्तर की जानकारी प्राप्त करनी होगी। ध्यान रहे कि दक्षिण भारत का पर्यावरण उत्तर, पूर्व या पश्चिमी भारत से सर्वथा भिन्न हो सकता है। इसलिए अलग-अलग क्षेत्र का अलग विश्लेषण करना होगा।

राष्ट्रीय स्तर

क्षेत्रीय स्तर के समान राष्ट्रीय स्तर का भी विश्लेषण किया जा सकता है, परन्तु यहां सम्पूर्ण राष्ट्र के पर्यावरण की स्थितियों का

www.neerajbooks.com